कुत्ता-प्रेम

भाजपा की सांसद मेनका गांधी ने रेलवे मंत्रालय पर आरोप लगाया है कि रेलवे के द्वारा पश्चिम बंगाल से बंगला देश को वन्य जीवों की तस्करी होती है। इस पर रेलमंत्री ममता बनर्जी बिफर गईं। उन्होंने उनके बयान को झूठा और नाजायज बताया। इसके बाद एक वामपंथी सांसद ने कहा कि रेलवे प्लेटफॉर्मों पर आवारा कुत्ते इधर से उधर घूमते रहते हैं। इससे यात्रियों को काफ़ी परेशानी होती है। इस पर मेनका गांधी ने कहा कि वे कुत्तों को प्यार करती हैं चाहे वे पालतू हों अथवा आवारा। गौरतलब है कि मेनका गांधी और इन जैसे पशु-प्रेमियों की आपत्ति और विरोध के चलते भेड़ों को मार कर कुत्ता काटे मरीज़ों के लिए जो दवा बनती थी, उसे बंद कर दिया गया। इससे सरकारी अस्पतालों में टीके नहीं मिलने के कारण वैसे मरीज़ों को भारी परेशानी हो गई जिन्हें आवारा कुत्तों ने काट रखा हो। अब उन्हें इलाज के लिए महंगे प्राइवेट अस्पतालों में जाना पड़ता है। इस पशु-प्रेम के चलते मेनका का काफ़ी विरोध भी हुआ, पर इसका कोई असर उन पर नहीं हुआ। मेनका गांधी का मानना है कि पशुओं को भी स्वतंत्रता का अधिकार है। अत: उनका मारा जाना अथवा उनकी पकड़-धकड़ करना उचित नहीं। वे लोग़ों को काटते रहें, प्लेटफार्मों पर भटकते रहें, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। आखिर वे पालतू कुत्तों के साथ ही आवारा कुत्तों से भी प्रेम करती हैं। भूलना नहीं चाहिए कि आवारा कुत्ते क्या, एक समय था जब वे आवारा लोग़ों से भी काफ़ी प्रेम करती थीं और इसके लिए बेहद चर्चित हुई थीं।

अस्पताल में कुत्ते

एक परिचित बीमार पड़ कर जब अस्पताल में भर्ती हुए तो उन्हें देखने एवं मिजाजपुर्सी के लिए जाना पड़ा। पहले से उस सरकारी अस्पताल का काफ़ी नाम सुन रखा था। ऊपर की मंजिल में स्थित वार्ड में जाने के लिए जब सीढ़ियां चढ़ने लगा तो वहां की गंदगी को देख लगा कि उलटी हो जायेगी। सीढ़ियों पर मानव-मल और पशु-मल। यही नहीं, एक प्रयोग किया हुआ कंडोम भी दिखाई पड़ा। अचरज हुआ। आखिर यहां कौन शांत करता है अपनी सेक्स की भूख? बहरहाल, जब सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा तो दो-तीन आवारा कुत्ते चहलकदमी करते दिखाई पड़े। वे इधर-उधर खाने-पीने की चीजें तलाश रहे थे। तभी कचरे में एक को रोटी का टुकड़ा दिख पड़ा। अब सारे झांव-झांव करते उधर को भागे। वार्ड में पहुंचा तो वहां नीम-अंधेरा था। मोबाइल की टार्च जलाई तो वार्ड में एक किनारे परिचित महोदय बेड पर लेटे दिखाई पड़े। उधर को बढ़ा। सामने जा कर हाल-चाल पूछ मिजाजपुर्सी करने लगा। उन्होंने मुझे बैठने को कहा। बगल का बेड खाली था। नीम-अंधेरा होने के कारण कुछ साफ़-साफ़ दिखाई नहीं पड़ा और जैसे ही मैं बेड पर बैठा दो-तीन पिल्ले किंकियाते हुए नीचे भागे। हमारे परिचित महोदय भी चौंक पड़े। फ़िर उन्होंने कहा कि डॉक्टर ने दो-चार रोज़ और भर्ती रहने को कहा है, पर यहां कुत्तों से जी उब गया है। ऑपरेशन थियेटर तक में कुत्ते घूमते नज़र आते हैं। मैं तो आज ही किसी प्राइवेट अस्पताल में दाखिल होने जा रहा हूं। मैंने कहा कि अभी ही यहां से बोरिया-बिस्तर समेट लो तो अच्छा है। शिफ़्ट होने में मैं भी मदद कर दूंगा।

अकेलेपन का डर

गडकरी गद्दी पर आ गये, पर मैंने आपको पिता तुल्य मानते हुए पार्टी में लेने की गुहार की थी, वो आपने अनसुनी कर दी। मैंने सोचा था कि आपके चरणों की धूलि को माथे पर लगा अपना यह जनम सुफल कर लूंगी, पर हे आडवाणी! आपने ऐसा होने नहीं दिया। अब मैं कहां जाऊं? किसके पैरों तले शरण पाऊं? साधु-संन्यासियों के बीच मेरा मन नहीं लगता। भगवा पहनती हूं तो क्या हुआ, रमी हुई हूं राजनीति में। राजनीति छोड़ कर काशीवास करने लगूं, संभव नहीं। वैसे, समय-समय पर तीर्थयात्रा करने निकलती रही। वहां यही देखा कि साधुओं से ज्यादा लंपट और कोई नहीं। अर्द्ध नग्न नहाती स्त्रियों को गड़प कर जाने वाली नज़रों से देखते हैं। बचपन और चढ़ती जवानी के अनुभवों से सीख लेकर अब तो मैं नदियों में नहाती ही नहीं, फाइव-स्टार होटलों के स्नानागारों में ही नहाती हूं। जिस शहर में फाइव-स्टार होटल नहीं, वहां जाना और गये तो रुकना शायद ही होता है। जो हो, अब मुझे भाजपा में वापस आना है। कल्याण को जब एक मौका दिया गया तो मुझे क्यों नहीं देवता? बस एक चांस दो। दे कर देखो। मैं तुम्हारी पालतू बनी रहूंगी। गोविंदाचार्य की ओर पलट कर नहीं देखूंगी। उसने ही मुझे विपथगामी बनाया। बहुत बड़ा खूसट है। इसलिए प्रार्थना है प्रभु, मुझे वापस अपने घर में बुला लो। गडकरी को मैं काबू कर लूंगी। इतना आत्मविश्वास है मुझमें। वैसे अगर मुझे घर वापसी का चांस नहीं दोगे तो कम से कम अपने गठबंधन में मेरी भारतीय जनशक्ति पार्टी को ले लो। अकेले रहने से राजनीति के जंगल में डर लगता है।

गपशाप

नेताओं के नेता

जब तक रहेगी सांस तब तक पार्टी पर अपनी पकड़ रखने का इंतज़ाम कर लिया। सुषमा और जेटली को भी संतुष्ट कर दिया। अब ये मेरे खेमे में हैं। संघ के आशीर्वाद से ऐसे गडकरी न जाने कितने आयेंगे और कितने जायेंगे, अपने पर कोई असर नहीं होने वाला। अब खुल कर जिन्ना के समर्थन में गीत गाऊंगा, देखता हूं, कौन मुझे रोकने आता है? जसवंत ने भी जिन्ना का गुण खूब गाया। पर बेचारा पार्टी से निर्लंबित हो गया। मेरी चले तो उसे दुबारा पार्टी में ले लूं। मैं अब सिर्फ़ नेता मात्र ही नहीं हूं। मैं तो नेताओं का नेता हूं। नेता कैसे चलें, किस राह पर चलें, यह बताना मेरा काम है। मैं सिर्फ़ रथयात्री ही नहीं हूं। मैं भाजपा की आंख और नाक भी हूं। राजनाथ जब तक रहे, मेरे स्वरों में बोलते रहे। जब मैंने एक बार फ़िर रथयात्रा की घोषणा की थी तो मेरी देखादेखी राजनाथ ने भी रथयात्रा करने की घोषणा कर दी। तब मैंने अपनी रथयात्रा स्थगित कर दी। राजनाथ को भी ऐसा ही करना पड़ा। अब यह गडकरी। तो गडकरी को भी मेरा आशीर्वाद लेना होगा। तभी वह पार्टी चला पायेगा, वरना नहीं। अटल के बाद दूसरा नाम आडवाणी का ही है। किसी को शक हो तो मेरी मुखालफ़त कर के देख ले। राजनीति में आस पर ही ज़िंदा रहा जा सकता है। इस बार सोनिया के झांसे में जनता आ गई। पर सोनिया ने जनता को महंगाई की सौगात दी है। पांच बरस बाद जब फ़िर चुनाव होंगे तो देख लेना सोनिया की क्या बुरी गत बनती है। अभी मैं मरने वाला नहीं। कम से कम पांच साल पहले तो नहीं ही। तब मैं प्रधानमंत्री बनूंगा। उस समय गडकरी और राजनाथ मुझे फूलों की माला पहनायेंगे। सुषमा कुछ अन्य देवियों के साथ हेलिकॉप्टर से मुझ पर पुष्पवर्षा करेंगी।

लुटेरों के सिरमौर

'गुरु जी' तीसरी बार झारखंड के मुख्यमंत्री बने। बेचारा प्रदेश जबसे बना है, कभी भी स्थाई सरकार का मुंह नहीं देख सका। एक आता है तो एक जाता है। गुरु जी तो दो बार आ गये, पर टिक नहीं पाये। अब तीसरी बार आये हैं, देखना है कब तक टिकते हैं। पक्के रिश्वतखोर हैं। अपनी जवानी के दिनों में 'क्रांतिकारी' हुआ करते थे। इनकी रिश्वतखोरी की आदत के बारे में लोगों को तब पता चला जब इन्होंने मरहूम नरसिंहा राव जी की सरकार को बचाने के लिए अपने साथ-साथ कुछ दोस्तों को भी रिश्वत लेकर सरकार बचाने को कहा और सरकार बचा भी दी। इसके अलावा इन्होंने और भी कई 'आपराधिक' कारनामे किये। इनमें प्रमुख है अपने निजी सचिव की हत्या। समझा जाता है कि उनका निजी सचिव उनके कई राज़ जान गया था और वक्त आने पर उनकी मिट्टी पलीद कर सकता था। बहरहाल, इस बार तो पूरे राज्य का खज़ाना ही गुरु जी के सामने खुला रहेगा। जितना चाहें, माल उड़ायें। जब झारखंड नहीं बना था तो इसके लिए संघर्ष करने वाले कहा करते थे कि झारखंड को राज्य और केंद्र, दोनों मिल कर लूट रहे हैं। पर जब झारखंड बन गया तो इसके शासकों ने उसे कहीं ज्यादा बेरहमी से लूटना शुरू कर दिया। एक मंत्री ने तो अपने बेटे के जन्मदिन पर पचास लाख फूंक डाले। आदिवासी मंत्रियों ने आदिवासियों को लूटने में पूर्व की सभी सरकारों को मात दे दिया। इन्होंने इतना लूटा, इतना लूटा कि आम जनता त्राहि-त्राहि कर उठी। लोग़ कहने लगे कि इससे तो अच्छी हालत तब थी जब झारखंड नहीं बना था। पर जंगलों में झोंपड़ियों में रहने वाले एकाएक अकूत वैभव के मालिक बन गये तो उनका दिमाग ही फिर गया। उन्होंने बेरहमी से उस धन को लूटना शुरू कर दिया। हमारे गुरु जी भी उन्हीं में से एक हैं। एक नहीं, कहें सिरमौर हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

गडकरी ने मुंह नहीं खोला

गडकरी-गडकरी का शोर बहुत सुना था, पर जब मंच पर आये तो जमे नहीं। लेकिन संघ की पसंद के आगे किसकी चलती है। गडकरी को उन क्षेत्रों में कोई जानने वाला नहीं जहां भाजपा का वोट बैंक है। महाराष्ट्र की राजनीति तक सिमटे रहे हैं, अखिल भारतीय आयोजनों में भी दुबक कर बैठना उनकी आदत में शुमार है।

इनकी तस्वीर को भाजपा नेताओं के बीच लगा दिया जाये तो कई भाजपाकर्मी उन्हें पहचान तक नहीं पायेंगे। इतने दिन बीत गये, गडकरी ने अभी तक अपने लिए एक इंटरव्यू तक का इंतजाम नहीं किया है। क्या वे मुंह नहीं खोलते। बिना मुंह खोले राष्ट्रीय पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष पद कैसे संभालेंगे। यह पद कांटों भरा ताज है। गडकरी की जगह यदि सुषमा स्वराज अध्यक्ष बनतीं तो ज्यादा मजा आता। दोनों राष्ट्रीय दलों की अध्यक्ष - महिला। तब टक्कर भी कांटे की होती।

मंत्री महोदय का 'प्रेस से मिलिये' प्रोग्राम

चुनाव में जीत की गहमागहमी और मंत्री बनने के बाद नेता जी ने अपने नगर का दौरा किया तो पत्रकारों ने उन्हें घेर लिया और 'स्थानीय' से 'राष्ट्रीय' कहे जाने वाले अख़बारों में अच्छी-खासी पब्लिसिटी दी। यह देख नेता जी का दिल बाग-बाग हो उठा।

वैसे काफी पहले से लोकल पत्रकारों से उनका घनिष्ठ संबंध था। एकाधिक पत्रकारों को उन्होंने 'पाला-पोसा' भी था। कुछ पत्रकारों को उन्होंने 'मंथली' भी बांध रखा था जो उनके इंटरव्यू, फोटो और विज्ञापन लगातार प्रकाशित किया करते थे। पर इस बार 'प्रेस से मिलिये' प्रोग्राम में पत्रकारों ने जिस तरह उनकी जय-जयकार की थी और कैमरे की फ्लैशलाइटें जितनी चमकी थीं, उससे नेता जी गद्गद् हो गये थे और प्रोग्राम के अंत में उनका धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा था कि पत्रकारों से उनके अटूट संबंध हैं और जरूरत इस बात की है इस संबंध को और भी मजबूत किया जाये। उन्होंने कहा कि जिस तरह एक नेता जनता की सेवा करता है, ठीक उसी तरह एक पत्रकार भी नेताओं की सेवा करता है। अगर पत्रकारों ने नेताओं के बयान, इंटरव्यू, फोटो आदि नहीं छापे तो उन्हें कौन जानेगा, ठीक उसी तरह जैसे नेताओं ने उनकी आर्थिक मदद नहीं की, उन्हें चंदा यानी सहयोग राशि नहीं दी तो इस महंगाई में वे कैसे अपने परिवार का पालन-पोषण करेंगे और समाचार लिखने जैसे थकाऊ काम के बाद कैसे 'एनर्जी ड्रिंक' का इंतजाम कर सकेंगे?

पत्रकारों ने जोरदार तालियां बजाईं। कुछ ने तो जिंदाबाद-जिंदाबाद के नारे तक लगाने शुरू कर दिये। इसी बीच नेता जी के निजी सचिव ने प्रेस क्लब के प्रमुख के कान में बता दिया कि किस होटल के किस कमरे में उन लोग़ों के लिए 'एनर्जी ड्रिंक' की व्यवस्था की गई है। इसके बाद नेता जी का 'प्रेस से मिलिये' प्रोग्राम समाप्त हुआ। पत्रकार मिलने वाले फ्लैट की कल्पना करते हुए अपने-अपने कार्यालय की ओर रवाना हुए। दूसरे दिन अख़बारों में नेता जी के पत्रकारों से इस मिलन की खबर सचित्र प्रकाशित हुई। नेता जी और पत्रकार धन्य-धन्य हुए।

नेता जी ने कहा कि वे जानते हैं कि एक पत्रकार भले ही दसवीं फ़ेल ही क्यों न हो, कलम का सिपाही होता है और पैसा कमाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार होता है तो उसकी मदद करना अपना फ़र्ज है। नेता जी ने यह भी कहा कि वे जानते हैं कि आज पत्रकार चाहे कितनी भी ऊंची डिग्री लिये क्यों न हो और बड़े 'राष्ट्रीय' अख़बारों में भी नौकरी क्यों न करता हो, एक चपरासी से भी कम तनख्वाह पाता है। ऐसे में मोटरसाइकिल और मोबाइल मेंटेन करने के लिए उनका इधर-उधर मुंह मारना कोई ग़लत बात नहीं है। उन्होंने कहा कि आज पत्रकारों के सहयोग के बिना राजनीति के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ा जा सकता और नेताओं के सहयोग के बिना पत्रकार भी अख़बार नहीं निकाल सकता। इस तरह नेता और पत्रकार के बीच अन्योनाश्रय संबंध है। दोनों एक-दूसरे का सहयोग किये बिना एक क़दम भी आगे नहीं चल सकते।

नेता जी के इस कथन के बाद पत्रकार गण ताबड़तोड़ तालियां बजाने लगे। इससे नेता जी काफी उत्साहित हुए और अपना भाषण जारी रखा। उन्होंने कहा कि बहुत से पत्रकार बाहर से आकर यहां रहते हैं। वे किराये पर मकान लेकर रहते हैं और इस महंगाई में बड़ी मुसीबतें झेलते हैं। अत: उन्होंने सोचा है कि पत्रकारों की आवास समस्या हल करने के लिए खास फ्लैट बनाये जायें। इस पर पत्रकारों ने जोरदार तालियां बजाईं। कुछ ने तो जिंदाबाद-जिंदाबाद के नारे तक लगाने शुरू कर दिये। इसी बीच नेता जी के निजी सचिव ने प्रेस क्लब के प्रमुख के कान में बता दिया कि किस होटल के किस कमरे में उन लोग़ों के लिए 'एनर्जी ड्रिंक' की व्यवस्था की गई है।

इसके बाद नेता जी का 'प्रेस से मिलिये' प्रोग्राम समाप्त हुआ। पत्रकार मिलने वाले फ्लैट की कल्पना करते हुए अपने-अपने कार्यालय की ओर रवाना हुए। दूसरे दिन अख़बारों में नेता जी के पत्रकारों से इस मिलन की खबर सचित्र प्रकाशित हुई। नेता जी और पत्रकार धन्य-धन्य हुए।

■ ग़रीबदास